नवभारत 06
सतना, रविवार, 26 अप्रैल 2026

मां बगलामुखी : आत्मबल, संयम और विजय की प्रेरणा

डॉ. मुकेश नायक

मां बगलामुखी भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में शक्ति, स्थिरता और नियंत्रण की अद्वितीय प्रतीक मानी जाती हैं. उनका स्वरूप यह संदेश देता है कि जीवन के हर संघर्ष में केवल बाहरी प्रयास पर्याप्त नहीं होते, बल्कि आंतरिक संतुलन और मन पर नियंत्रण ही वास्तविक विजय का मार्ग प्रशस्त करता है. आधुनिक जीवन की तेज गति, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और निरंतर बदलती परिस्थितियों के बीच व्यक्ति अक्सर मानसिक दबाव, अस्थिरता और नकारात्मकता से घिर जाता है. ऐसे समय में मां बगलामुखी का स्मरण हमें यह सिखाता है कि कठिनाइयों से भागना नहीं, बल्कि उन्हें अपने संयम और धैर्य से नियंत्रित करना ही सच्ची सफलता है. वे हमें यह समझाती हैं कि मन यदि स्थिर है तो परिस्थितियां भी अनुकूल बन सकती हैं, और यदि विचार स्पष्ट हैं तो लक्ष्य तक पहुंचने का मार्ग स्वत: सरल हो जाता है.

मां बगलामुखी का मूल संदेश है कि व्यक्ति अपने मन, वाणी और कर्म पर नियंत्रण स्थापित करे, क्योंकि यही तीन तत्व उसके जीवन की दिशा और परिणाम निर्धारित करते हैं. जब मन अस्थिर होता है, तो निर्णय भ्रमित हो जाते हैं, जब वाणी अनियंत्रित होती है तो संबंधों में कटुता आ जाती हैं, और जब कर्म असंतुलित होते हैं तो परिणाम अपेक्षा के विपरीत मिलते हैं. इसलिए उनका दर्शन हमें आत्म-अनुशासन और आत्म-नियंत्रण की ओर प्रेरित करता है, जिससे व्यक्ति न केवल अपने भीतर की कमजोरियों को पहचानता है, बल्कि उन्हें शक्ति में परिवर्तित करने की क्षमता भी विकसित करता है. जीवन में आने वाली बाधाएं, आलोचनाएं और असफलताएं व्यक्ति को कमजोर नहीं बनातीं, बल्कि वे उसे और अधिक सशक्त बनने का अवसर देती हैं, और मां बगलामुखी की कृपा से यही चुनौतियां आगे बढ़ने की प्रेरणा में बदल सकती हैं.

मां बगलामुखी का दर्शन हमें यह सिखाता है कि वास्तविक शक्ति बाहरी साधनों में नहीं, बल्कि हमारे भीतर छिपी हुई है, जिसे जाग्रत करने के लिए संयम, धैर्य और आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है. यदि व्यक्ति अपने मन को स्थिर रखे, अपनी वाणी को मर्यादित रखे और अपने कर्मों को सकारात्मक दिशा में लगाए, तो कोई भी परिस्थिति उसे उसके लक्ष्य से नहीं रोक सकती. उनका आशीर्वाद हमें यह विश्वास देता है कि हर अंधकार के बाद प्रकाश अवश्य आता है और हर संघर्ष के बाद विजय निश्चित होती है, बस आवश्यकता है अपने भीतर की शक्ति को पहचानने और उसे सही दिशा में उपयोग करने की.

उनका पावन मंत्र—ऊं ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ऊं स्वाहा—केवल बाहरी शत्रुओं को शांत करने का प्रतीक नहीं है, बल्कि हमारे भीतर के भय, संदेह, क्रोध और नकारात्मक विचारों को नियंत्रित करने का भी गहरा संदेश देता है. इस मंत्र का सार यह है कि व्यक्ति अपनी वाणी को संयमित रखे, अपने विचारों को स्पष्ट और सकारात्मक बनाए, और अपने कर्मों को सही दिशा में केंद्रित करे, क्योंकि यही आंतरिक विजय उसे बाहरी सफलता की ओर ले जाती है. जब व्यक्ति अपने भीतर के भ्रम और नकारात्मकता को समाप्त कर देता है, तब उसका आत्मविश्वास स्वाभाविक रूप से बढ़ता है और वह हर परिस्थिति का सामना दृढ़ता के साथ कर पाता है.

मां बगलामुखी की प्रेरणा यह भी सिखाती है कि सफलता किसी एक क्षण का परिणाम नहीं होती, बल्कि यह निरंतर प्रयास, धैर्य और विश्वास का फल होती है. आज के समय में जहां लोग त्वरित परिणामों की अपेक्षा रखते हैं, वहीं उनका संदेश हमें यह याद दिलाता है कि सही दिशा में किया गया सतत प्रयास ही स्थायी सफलता दिलाता है. जब व्यक्ति अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहता है, अपने विचारों को नियंत्रित करता है और कठिनाइयों के बावजूद अपने मार्ग से विचलित नहीं होता, तब वह धीरे-धीरे अपने भीतर एक ऐसी शक्ति विकसित करता है जो उसे हर बाधा से पार ले जाती है. यही आत्मबल उसे दूसरों से अलग बनाता है और उसे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है.

क्लास by बड़े भाई

मां बाप हैं तो इतना ध्यान दें

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

अपने पंद्रह वर्ष के बेटे के आगे उनके पिताजी बेटे की उपलब्धियों का बखान करते हुए अपने भाई के बेटों की हँसी उड़ा रहे थे कि वो उतना नहीं कर सके, उनमें यह ख़ामी है, उनमें यह कमी है और इस तरह उनकी रात्रि का भोजन पूरा होता था और यही से होती है उस बेटे में से संस्कार निकलने की शुरुआत.

फिर उस बेटे का अपने चाचा के लड़कों के साथ व्यवहार उसी के हिसाब से होगा जैसे उनके आदर्श पिता जी ने दृष्टिकोण सौंपा है. फिर इस तरह का दृष्टिकोण सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं रहता वह लांघकर बहुत दूरी तय करता है और एक समय ऐसा बनता है कि वही बेटा खुद औरों की हंसी का पात्र बन जाता है, जिसके पास बड़ों से, छोटो से बोलने का ढंग नहीं है, मिलकर चलने का ढंग नहीं है, किसी की खूबियों की कद्र करने का ढंग नहीं है. फिर यह दृष्टिकोण उस बेटे के लिए दुनिया का बन जाता है.

यह बात हर घर की नहीं है लेकिन बहुत सारे घरों की है. कहना यह चाहता हूं कि आप जब पिता होते हैं तो आप बस पिता नहीं बनते बल्कि एक जिम्मेदारी भी आप पर आ जाती है कि आप अपनी तरफ से अपने बच्चों के मन में हर विषय पर सुंदर दृष्टिकोण डालें. जिसमें सबके प्रति स्नेह हो, सम्मान हो प्रेम हो, मदद करने का भाव हो, इससे न सिर्फ इस व्यवहार से सबको अच्छा लगेगा बल्कि इससे आपके बेटे का भी मान सम्मान बढ़ेगा. ध्यान रहे सम्मान के बदले ही सम्मान की अपेक्षा करिए. आपके प्रभाव से अधिक देर तक यह नहीं पाया जा सकता.

प्रभु श्री राम की पूरी वन यात्रा में उनके कठिन समय उनके व्यवहार की वजह से आसानी से कटे, उनके राजकुमार होने से नहीं. उनसे जुड़े लोगों ने कितनी आसानी से उनका कठिन समय बिता दिया.

जब आप और बेटा बैठे हों तो बात करते हुए ध्यान रखें. उसको दुनिया की सुंदर तस्वीर दिखाएं. इससे वो सदैव सुंदरता देखेगा और जहां बुरा होगा उसको हटाने का भाव रखेगा.

आपके दिए संस्कार आपके बच्चों का संसार निर्मित करते हैं. वो सीख पाएं न सीख पाएं लेकिन आप अपनी जिम्मेदारी बिल्कुल निभाएं.

आपको विषय कैसा लगा, ज़रूर बताइएगा. धन्यवाद

व्यंग्य

दरोगा जी का कुत्ता

पुनीत श्रीवास्तव

दरोगा जी ने पुलिसिया अंदाज में धुआंधार, भयंकर, न लिखने योग्य बीप-बीप वाली गालियों की बौछार निःसृत करने के बाद एक गिलास पानी गटका. खखार कर गला साफ किया. फिर दहाड़े, 'बताता है कि नहीं हरामजादे.' उनके सामने एक मरियल, पिद्दी-सा आदमी हाथ जोड़े खड़ा था. 'हुजूर, माई-बाप, सरकार, उसमें मेरा कोई हाथ नहीं है,' वह रिरियाया. वह कांप रहा था, थरथरा रहा था. लेकिन मन ही मन वह अपनी इस बॉडी लैंग्वेज पर इठला रहा था. चोरी-चकारी के धंधे को छोड़कर जब से वह एक पार्टी का प्राथमिक सदस्य और एक स्थानीय नेता जी का पिछलग्गू बना है तभी से उसमें यह गुण आ गया है. मन ही मन वह दरोगा जी को गरिया भी रहा था कि जब मैं धंधे में था तो तुम्हारे जैसे कई दरोगा आए गए. पिछवाड़े में डंडे खाए, उल्टे भी लटके. कभी माल बरामद हुआ कभी नहीं हुआ. कुछ दिनों के लिए जेल हो आया. कभी दरोगा जी से सेटिंग हो गई तो मामला वहीं सुलझ गया. हम नहीं बदले पर दरोगा बदलते रहे. राजनीति का चस्का लगा सो अब धंधे से किनारे हो गया. फिर भी पुराने रिकॉर्ड के आधार पर कभी-कभी बुलावा आ जाता है. दरोगा जी गुर्राए, 'चल भाग साले यहाँ से. लेकिन टॉमी के बारे में कुछ मालूमात हो, सुराग लगे तो फौरन इत्तला करना.'

दरोगा जी को सलाम ठोककर वह थाने से बाहर निकला तो थाने का पुराना सिपाही मिल गया. उससे चाय-पानी की पुरानी यारी थी. उसने सिपाही को भी सलाम ठोका, 'दीवान जी किस्सा क्या है? आपको तो मालूम है कि फिलहाल मैं नेता जी के साथ हूँ. मेरी हाजिरी क्यों लगवा दी?' 'चल यार पहले चाय पिला फिर बताता हूँ,' सिपाही उसके साथ हो लिया. थाने के पास चाय के ठेले पर चाय सुड़कते हुए सिपाही बोला, 'दरोगा जी दूसरे जिले से तीन-चार महीने पहले ही ट्रांसफर होकर आए हैं और उन्हें यह थाना मिला है. यहाँ पर पुलिस कॉलोनी में सरकारी मकान मिला है. वहीं रह रहे हैं बीवी-बच्चों के साथ. टॉमी भी साथ रहता है.'

'टॉमी क्या उनका बच्चा, रिश्तेदार या नौकर है,' उसने पूछा. 'अबे नहीं, वह तो दरोगा जी का कुत्ता है,' सिपाही बोला. 'टॉमी चार-पांच दिन से गायब है. तभी से दरोगा जी भन्नाए हुए हैं. टॉमी सबका लाड़ला था. बच्चों ने खाना-पीना भी छोड़ रखा है. दरोगाइन साहब को लताड़ पर लताड़ मारे जा रही हैं कि छि- लानत है कि थानेदार का कुत्ता चोरी हो गया. लोग और ज़माना क्या कहेगा. दरोगा जी की नाक और इज्जत का भी सवाल बन गया है टॉमी को खोजना.

वे टॉमी के चोरी होने की रपट भी नहीं लिख सकते क्योंकि इससे उनकी भद्द उड़ जाएगी. गुमशुदा की तलाश जैसे इश्तेहार भी नहीं छपवा सकते. इस घटना की वे किसी को हवा भी नहीं लगने देना चाहते. सीनियर अफसरों को पता लग गया तो थानेदारी पर आंच आ जाएगी कि एक कुत्ता नहीं सम्भाल सकते, थाना कैसे सम्भालोगे. मीडिया को इसकी गंध लग गई तो थू-थू होना पक्का है. अभी उन्हें अपने एरिया और तुम जैसों की ज्यादा जानकारी नहीं है इसलिए वे पूछताछ में सिर्फ पूछताछ ही कर रहे हैं. मार-मार के कबुलवा नहीं रहे हैं. इसलिए बेटा तुम सस्ते में निपट गए. उन्हें यकीन है कि कोई चोर-उचक्का ही टॉमी को चुरा ले गया है सो रोज की ऐसी परेड आयोजित हो रही है. वैसे था भी तो वह जर्मन शेफर्ड, गबरू-जवान.

दरोगा जी कहते हैं कि उन्होंने उसे खरीदा था. अंदर की बात यह है कि पिछली पोस्टिंग वाले जिले में एक कुत्ता-चोर से उन्होंने छह कुत्ते ज़ब्त किए थे. यह कुत्ता उस समय बच्चा था और दरोगाइन को पसंद आ गया था सो पांच की बरामदगी दिखाकर इसे खुद रख लिया.' सिपाही ने मुँह में पान ठूँसते हुए खुलासा किया. 'यार तू भी कभी-कभी सिविल लाइन में रहने वाले साहबों के ऊँची नस्ल वाले शानदार कुत्ते चुरा लेता था. इसी बिना पर कुछ मुखबिरों ने तेरा नाम भी साहब को बताया. इसीलिए पूछताछ के लिए तुझे भी बुला लिया,' सिपाही सिगरेट सुलगाते हुए बोला. सिपाही के चाय-पान-सिगरेट के पैसे चुकाते हुए वह बोला, 'दीवान जी, आप तो जानते ही हो कि मैं अब पार्टी का 'सम्मानित सदस्य' हूँ और शायद भविष्य में 'माननीय' हो जाऊं. फिलहाल मैं इस टुच्चीगिरी में नहीं हूँ. दरोगा जी के कान में कभी यह बात डाल देना. यार अब अपनी भी थोड़ी इज्जत होने लगी है.' सिपाही इस जोक पर खी-खी कर हँस दिया. 'दीवान जी पुलिस लाइन से टॉमी गायब हुआ है. वहाँ तो एक ही बिरादरी के रहते हैं. वहाँ किसकी हिम्मत हो सकती है टॉमी को चुराने की,' उसने पूछा. 'यही तो, अब वहाँ रहने वालों के घरों की तलाशी तो नहीं ले सकते. एक से एक तुर्रम खाँ हैं वहाँ,' सिपाही दार्शनिक होने लगा. 'दीवान जी, टॉमी मिल जाए तो बताइयेगा. वरना तब तक खटका और टेंशन बनी रहेगी,' उसने सिपाही को सलाम कर राह पकड़ी.

दरोगा जी के टॉमी के गुमने की घटना को एक क्राइम रिपोर्टर ने सूँघ लिया और खबर छप गई. उसने भी यह खबर पढ़ी. दरोगा जी की क्या हालत होगी इसका अंदाज लगा कर वह प्रसन्न हुआ. दूसरे दिन फिर एक धमाकेदार न्यूज़ छपी कि दरोगा जी का टॉमी मिल गया है. विस्तृत खबर इस प्रकार थी— दरोगा जी के थाने में एक लड़की के गायब होने की रपट दर्ज हुई. तहकीकात में पता चला कि पड़ोस का एक लड़का भी नदारद है. दोनों में लंबे समय से गुटरगूं चल रही थी. इससे दरोगा जी के दिव्य-चक्षु जाग्रत हो गए. उन्होंने पुलिस कॉलोनी में सुराग़रसी की तो यह पाया कि कॉलोनी की एक कुतिया भी गायब है. दरोगा जी माजरा समझ गए कि टॉमी की उससे आँखें चार हुई होंगी और दोनों जवानी के नशे और इश्क में डूब कर चंपत हो गए हैं. लिहाजा दरोगा जी ने अपने स्तर पर खोजबीन करके दूर के टूटे खंडहरों से दोनों को बरामद कर लिया है. हाँ, गायब लड़की का अभी तक कोई पता नहीं चला है और उसके परिवार वाले थाने के चक्कर लगा रहे हैं. वे पुलिस पर उदासीनता बरतने के आरोप लगा रहे हैं. वहीं दरोगा जी का कहना है कि तलाश जारी है और जैसे टॉमी को ढूँढ निकाला है वैसे ही उन दोनों को भी बरामद कर लिया जाएगा.

खबर पढ़ कर उसने चैन की सांस ली. साली जान अटकी थी गले में कि टॉमी के चक्कर में दरोगा जी उसे ही न धर लें.

> कई दिनों बाद वह सिपाही उसे नेता जी की रैली में डंडे भांजते हुए मिल गया. उससे राज़ की और असली बात यह मालूम हुई कि दरोगा जी का टॉमी नहीं मिला था. यह तो खबर छपने के बाद अपनी लाज और साख बचाने के लिए दरोगा जी ने स्टोरी गढ़ी थी जैसे कि अक्सर गढ़ी जाती है. सेटिंग करके छपवा भी डाली. बरामदगी के बाद टॉमी को कौन सा अदालत में पेश करना था. था तो वह उनका ही कुत्ता. इसलिए इस खबर को गलत बताने वाला भला कौन था. इससे उनकी एफिशिएंसी का मैसेज आला अफसरों तक पहुँच गया. यह दीगर बात है कि वह गायब हुई लड़की और लड़का अभी तक हत्थे नहीं चढ़े हैं. यार वे कुत्ते-कुतिया थोड़ी न हैं कि उनकी स्टोरी बनाकर हाथ झाड़ लिए जाएँ.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

लघुकथा

हिस्सेदारी

संदीप तोमर

पार्वती देवी लंबे समय से बीमार थीं. पति रामप्रकाश डाक विभाग से सेवानिवृत्त हो चुके थे, पर उनके स्वभाव की कठोरता अब भी जस की तस थी. पत्नी की बीमारी भी उनके व्यवहार को नहीं बदल पाई थी.

बेटा विक्रम और बेटी— दोनों पास ही शहर में रहते थे, पर पार्वती देवी अपने ही घर में पराई-सी हो गई थीं. घुटन इतनी बढ़ गई कि बेटी उन्हें अपने साथ ले गई.

बेटे की तबीयत खराब होने के कारण वे उसके घर जाने में भी हिचकिचा रही थीं. उधर, जब वे बेटी के घर पहुँचीं तो भाभी की बात उनके कानों तक पहुँच ही गई— आपकी बहन कब तक माँ को अपने यहाँ रखेगी? बेटी के घर में माँ का रहना क्या शोभा देता है? सेवा करनी है तो गाँव जाकर कर लें मैं भी देखती हूँ कितनी सेवा करती है!

विक्रम भी समझ गया था कि पत्नी को माँ का दीदी के यहाँ रहना क्यों खटक रहा है.

पार्वती देवी को शुरू से ही जेवर बनवाने का शौक था. घर खर्च से जो भी बचता, वे चुपचाप जेवर गढ़वा लेतीं. इस बात का जिक्र विक्रम की पत्नी कई बार कर चुकी थी— माँ की तबीयत भी ठीक नहीं रहती और अब तो दिमाग भी साथ नहीं देता क्यों न उनकी सारी ज्वेलरी लाकर लॉकर में रख दें? कहीं खो गई तो?

हर बार विक्रम का एक ही जवाब होता— माँ की दो औलाद हैं. उनकी हर चीज़ पर दोनों का बराबर हक है— यहाँ तक कि पिताजी के फंड और गाँव की जमीन पर भी.

कुछ दिनों बाद पार्वती देवी ने खुद ही बेटे को फोन किया— बेटा, अब मुझे अपने घर ले चलो ज्यादा दिन बेटी के यहाँ अच्छा नहीं लगता.

विक्रम ने औपचारिकता निभाई— माँ, मैं ऑफिस में व्यस्त हूँ दीदी छोड़ जाएँगी.

शाम को बहन उन्हें लेकर आ गई. घर में हल्की-सी खामोशी पसरी हुई थी.

विक्रम ने सहज बनने की कोशिश की— दीदी, माँ आपके पास रहें या मेरे, क्या फर्क पड़ता है? सब उनकी इच्छा पर है.

माँ ने थके स्वर में कहा— बेटी, तू कब तक मेरी सेवा करेगी मेरी किस्मत में जो लिखा है, वही सही. अब बहू-बेटे के सहारे ही बाकी जिंदगी कट जाएगी तुम्हारे बाप से तो कोई उम्मीद नहीं.

विक्रम ने बात सँभाली— माँ, बाबूजी ऐसे ही हैं अब क्या बदलेंगे.

माँ चुप हो गईं. उनकी आँखों में अजीब-सी थकान थी, जैसे अब कोई उम्मीद शेष न हो.

तभी विक्रम की पत्नी चाय लेकर आई. बहन ने अपना पर्स खोला और एक छोटा-सा डिब्बा निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिया— भाभी, ये माँ के जेवर हैं आपके घर की अमानत. कल बैंक में लॉकर में रख दीजिएगा, कहीं खो न जाएँ.

कमरे में सन्नाटा छा गया.

भाभी का सिर झुक गया. विक्रम के चेहरे पर गर्व की हल्की मुस्कान उभरी.

और पार्वती देवी वे चुपचाप बैठी थीं.

शायद अब उन्हें समझ आ गया था— उनकी असली 'अमानत' क्या थी और उनकी 'जीने की आस' किस पर टिकी थी.

वे धीरे से बोलीं— अब मुझे सुकून है.

सबकी नज़रें उनकी ओर उठ गईं.

वे हल्की-सी मुस्कुराईं— कम से कम मेरे जीते-जी ही मेरी कीमत तय हो गई.

आयोजन

रस्किन बॉण्ड से हम सहज-सरल रचना सीखते हैं

उर्वशी उपाध्याय

रस्किन बॉण्ड जैसे लेखक की किस्सागोई हमें कई मायनों में चौंकाती है. वे ऐसे लेखक हैं जो अपने आसपास के लोगों, जगहों, पेड़-पौधों, पहाड़ों और भूत-प्रेतों तक को तनी खूबसूरती से उकरते हैं कि पाठक उसके आस्वाद में बँधता चला जाता है.उनकी कहानियों की भाषा, कहन और रवानगी देखते ही बनती है. हम उनसे सहज-सरल-सरस लिखने और भाषा प्रवाह के साथ- साथ अपने आसपास की छोटी-छोटी घटनाओं, साधारण से दिखते पात्रों और सहज जीवन को रचना सीख सकते हैं. यह बात देवास में लिटरेचर क्लब की रस्किन बॉण्ड पर आयोजित रचना गोष्ठी में उभरकर सामने आई. उनकी रचनाओं पर भी विस्तार से बातचीत हुई. इस रोचक चर्चा में वक्ताओं ने अपनी-अपनी बात रखी.

यह गोष्ठी भी रस्किन बॉन्ड की कहानियों की तरह ही थी. सरस-सरल-सहज, परंतु बेहद प्रभावशाली. उनकी कहानियों में नदी, पहाड़, मैदान, पतंग और बच्चों की मुस्कान जैसी प्रकृति और मासूमियत की सुंदर झलक मिलती है. ठीक उसी प्रकार गोष्ठी की भी अपनी मधुर और सुगंधित छटा थी. इसके बाद 'गुलदान' और 'छुई-मुई' जैसे निश्छल विषयों पर लिखी गई कविताओं पर अमेय कांत ने समीक्षात्मक टिप्पणी की. इससे रचना लेखन की बारीकियों को समझने के साथ उन्हें और बेहतर करने की सीख मिली. रचना-पाठ के सत्र में प्रतिभागियों ने अपनी-अपनी नई रचनाओं का पाठ किया.

दूसरे चरण में लिटरेचर क्लब की साहित्य, सरोकार और चिन्तन की संवाहक द्वैमासिक पत्रिका वर्तिका के अंक का विमोचन किया गया. पत्रिका का सुंदर, आकर्षक आवरण प्रत्युष वैद्य द्वारा सृजित है. संपादक मंडल के मनीष वैद्य, भावेश कानूनगो और मंजू जैन ने इसे एक खूबसूरत रूप देने के साथ-साथ कसावट से उम्दा सामग्री का भी पूरा धन रखा है. इसमें संकलित रचनाओं का अपना एक अलग ही आस्वाद है. यह एक ऐसी पत्रिका है. संचालन मनीष वैद्य मनीष शर्मा, हिमांशु कुमावत, कृपाली राणा आदि ने किया. आभार रश्मि शर्मा ने माना. दारासिंह चंदेल, चयन कानूनगो, तनिष्का वैद्य, संदीप भटनागर आदि ने भी अपने विचार रखे. एक ही स्थान पर विभिन्न प्रकार की उच्चस्तरीय परिचर्चा विरले ही देखने को मिलती है, परंतु ऐसे उत्कृष्ट आयोजन लिटरेचर क्लब में लगातार संभव हो पाते हैं.

कविता

सखि री, मोरे नैना बरसत जाएं

राकेश धर द्विवेदी

राज छुपे जो इन अंखियन में
अधरों पर ना ला पाए...
सखि मोरे नैना बरसत जाए।

निसि दिन याद करूं मैं पिया की
फिर भी पिया ना आए,
कौन सुनेगा इस विरहन की
जिसको न चैना आए...
सखि री, मोरे नैना बरसत जाए।

पिया मिलन की आस में
सुध-बुध खो बैठी मैं,
बीत गई सारी नैना
हाल सुनाऊं मैं किस विरहन की,
मोसे अब कहा न जाए